शादी के लिए घोड़े पर बैठने की न करें जल्दी

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

अक्सर शादी को लेकर लोग मन में कई तरह के ख्वाब बुनते हैं, जिसमें से एक घोड़ी या बग्गी पर बैठने का भी होता है। कई लोग एक घोड़ी पर तो कई बग्गी पर बैठना पसंद करते हैं। इसके साथ ही कई बारातों में घोड़ों को नचाया भी जाता है, जो एक अलग आकर्षण का केंद्र होता है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि शादी में प्रयोग की जाने वाली कुछ घोड़ियां ऐसी बीमारी से ग्रस्त होती हैं, जो आप के लिए भी काफी घातक साबित हो सकती हैं।

जी हां, शादी में प्रयोग होने वाली कुछ घोड़ियां संक्रामक रोग का शिकार हैं, जिसका नाम ग्लैंडर्स है। ग्लैंडर्स एक संक्रामक और जानलेवा बीमारी है, जो जानवरों के जरिए इंसानों में भी फैलती है। ग्लैंडर्स अश्व प्रजाति (घोड़े, खच्चर और गधे) में होती है। बरखोडेरिया मैलियाई नामक जीवाणु से होने वाली इस बीमारी में पहले पशु को तेज बुखार आता है।

राष्ट्रीय राजधानी में इस बीमारी का पहला मामला दिसंबर 2017 में सामने आया था, बाफना कॉलोनी काजीकैंप निवासी रहमान के घोड़े में ग्लैंडर्स रोग की पुष्टि हुई थी, जिसके बाद नौ और घोड़ों में यह रोग पाया गया था। घोड़े के ग्लैंडर्स की चपेट में आने पर उसे मार देना ही बेहतर होता है। हालांकि इस बीमारी का पता पहले ही लग जाए तो कुछ सावधानियां बरतकर घोड़े को इससे बचाया जा सकता है। यह एक प्रकार की संक्रामक बीमारी है और इसकी प्रभावशीलता कुछ दिन से लेकर महीनों तक होती है। अगर पशुपालक को अपने घोड़े में इस बीमारी के लक्षण दिखाई देते हैं तो उसे अपने जानवर को तुरंत पास के पशु चिकित्सालय में इसकी जानकारी देनी चाहिए और खून की जांच करवानी चाहिए।

कैसे होती है ग्लैंडर्स की बीमारी : ग्लैंडर्स बीमारी में सबसे पहले इसके बैक्टीरिया, कोशिकाओं में प्रवेश कर जाते हैं। इलाज के बावजूद यह पूरी तरह से समाप्त नहीं होते। जिसके कारण दूसरे जानवर और इंसान भी इससे संक्रमित हो जाते हैं और इसकी चपेट में आ जाते हैं। यह बीमारी ऑक्सीजन के जरिए एक से दूसरे जानवर या इंसान में फैलती है। इस बीमारी के कारण घोड़े के शरीर में गांठे पड़ जाती हैं और गांठों में संक्रमण के कारण वह उठ नहीं पाता और थोड़े समय में उसकी मौत हो जाती है। गर्मी में नहलाना, दवाओं का छिड़काव जरूर करें। दूसरे पशुओं को बीमार पशु के नजदीक न जाने दें। इस बीमारी से जिस पशु की मृत्यु हुई हो उसे गड्ढे में दबा देना चाहिए या जला देना चाहिए।

इंसानों में ऐसे फैलती है यह बीमारी : मनुष्यों में यह बीमारी घोड़ों से आसानी से आ जाती है। वे लोग, जो घोड़ों की देखभाल या उनका इलाज करते हैं, उन्हें खाल, नाक, मुंह और सांस के द्वारा संक्रमण हो सकता है।

ग्लैंडर्स के लक्षण

इस बीमारी में घोड़ों के शरीर पर जख्म हो जाते हैं और नाक से झाग निकलता है।

घोड़े के शरीर में चकते हो जाते हैं।

इस बीमारी के होने पर घोड़े को बुखार आता रहता है।

घोड़ा खाना-पीना भी छोड़ देता है।

घोड़े के शरीर में गांठे पड़ जाती हैं।

असहनीय दर्द होता है।

श्वासनली में छाले हो जाते हैं।

फेफड़े में इन्फेक्शन हो जाता है।

ग्लैंडर्स से बचाव के तरीके

पशु को समय पर ताजा चारा-पानी दें।

बासी खाना न खिलाएं।

ज्यादा देर तक कीचड़ में न रहने दें।

जानकारी

एरोमाथैरेपी से जुड़े तथ्यों के बारे में जानें

आयुर्वेद या होम्योपैथ की तरह एरोमाथैरेपी भी वैकल्पिक चिकित्सा का एक प्रकार है। एरोमाथैरेपी का उद्देश्य आवश्यक तेलों और अन्य खुशबूदार संयंत्र यौगिकों का उपयोग कर व्यक्ति के स्वास्थ्य और मनोदशा में सुधार लाना है। इस स्लाइड शो के माध्यम से हम आपको एरोमाथेरेपी जैसी वैकल्पिक चिकित्सा से जुड़े कुछ तथ्यों के बारे में जानकारी देंगे।

सिर्फ खुशबुओं से इलाज करती है एरोमाथैरेपी : ऐरोमा का अर्थ है खुशबू और थैरेपी का उपचार। एरोमाथैरेपी उपचार की वह पद्धति है, जिसमें खुशबू के द्वारा अनेक बीमारियों का निदान संभव है। जी हां, आपको बीमारी के लिए गोली, कैप्सूल या कुछ भी लेने की जरूरत नहीं होती, एरोमाथेरेपी खुशबुओं से इलाज करती है। आवश्यक तेल की खुशबू का अहसास ही इलाज होता है। प्रत्येक खुशबू से सीधे हमारा मस्तिष्क प्रभावित होता है, हर

तेल में एक विशेष प्रकार की उपचारिक शक्ति होती है, जिसके द्वारा पूर्ण रूप से प्राकृतिक उपचार होता है। तेल पौधे के हर हिस्से की छोटी बूंदों से बनता है। आवश्यक तेल संयंत्र कोशिकाओं के बीच छोटी बूंदों के रूप में मौजूद रहते हैं। यह बूंदें प्रकृति में सुंगधित होती है और सत्त फूल, घास, बीज, जड़ी बूटी, खट्टे फल, पत्ते, छाल और जड़ों की छाल से निकाले जाते हैं।

क्या आप जानते हैं कि यह तेल बेहद महंगे होते है, क्योंकि इन्हें बनाने की प्रक्रिया बहुत ही धीमी है और इसका श्रम ज्यादा और महंगा होता है। गुलाब की तेल की एक बूंद को बनाने में 30 से ज्यादा गुलाब के फूलों का इस्तेमाल किया जाता है और इस लिक्विट का एक लीटर बनाने में 4-5 लाख से ज्यादा खर्च होता है।

पौधे के जरूरी एसेन्स मौजूद होने के कारण इन तेलों में कई प्रकार के चिकित्सकीय गुण होते है। यह तेल पौधों की जलवायु परिवर्तन, कीट, रोग आदि से रक्षा करता है और शोधों के अनुसार तेजी से मनुष्य के लिए अपने प्रभाव का प्रदर्शन करते है!

उपचार का रूप होता है बेहद व्यक्तिगत : इसकी खुशबू का असर अलग-अलग व्यक्ति पर अलग-अलग प्रकार से होता है। जैसे एसिडिटी, गुस्से, अल्सर, बुखार आदि के इलाज के लिए कुलिंग और शांत प्रभाव वाले गार्डेनिया, चमेली, गुलाब, चंदन आदि का प्रयोग किया जाता है। जबकि सिरदर्द, तंत्रिका चिंता, अनिद्रा आदि से ग्रस्त लोगों के लिए गर्म और स्फूर्तिदायक तेल जैसे कपूर का इस्तेमाल किया जाता है।

अन्य बीमारियों का इलाज करती है एरोमाथैरेपी

एरोमाथैरेपी में कई प्रकार के तेलों का उपयोग विभिन्न प्रकार की बीमारियों जैसे अपच, अनिद्रा, मुंहासे, दर्द, तनाव आदि को दूर करने के लिए किया जाता है। इसके अलावा आप इन तेलों का उपयोग कामुक भावना को जगाने, दिमाग को तेज करने और चेतना का विस्तार करने के लिए भी कर सकते हैं।